==
Language in India www.languageinindia.com ISSN 1930-2940 Vol. 19:5 May 2019
India's Higher Education Authority UGC Approved List of Journals Serial Number 49042
===

साङ्ख्य-योग दर्शन ई-परिभाषाकोश

E-Glossary for Samkhya-Yoga Philosophy

Anju, Ph.D. Candidate
Subhash Chandra, M.Phil., Ph.D.

Abstract

Modern generation wants to get information and knowledge promptly over the smart phones, tablets and computer through the Internet. Enormous learning contents are available over the Web in English language, but very limited in Indian languages. In order to improve upon this situation and to make description, knowledge and analysis of contents in ancient classics, etc., the authors of this article have initiated the development of knowledge and complete information system of technical terms of Indian philosophical traditions described in Sanskrit language. The objective of this paper is to demonstrate and describe an online information search system for the technical terms of Samkhy-Yoga Philosophy (SYP). A Samkhya Yoga Darshan e-Paribhasha Kosh has been developed. This helps seeking proper knowledge of these philosophies through the technical terms of the SYP. The information of any technical terms of SYP can be obtained on a single click. The information includes the definition of the technical terms in Sanskrit language as per the source text. Hindi meaning of each definition, its characteristic as per the various original texts, and complete analysis (including interpretation) interlinked with other technical terms appear in analysis part. The system is available online at http://cl.sanskrit.du.ac.in of the Department of Sanskrit, Faculty of Arts and University of Delhi.

Keywords: Sāṃkhya Yoga Philosophy, Technical terms in Sāṃkhya Yoga philosophy

संक्षेप

आधुनिक परिवेश में कोई भी व्यक्ति इंटरनेट के माध्यम से सूचना एवं ज्ञानार्जन करना चाहता है । कम्प्यूटर, स्मार्ट मोबाइल एवं आईटी के माध्यम से किसी भी समय अध्ययन एवं ज्ञानार्जन संभव हो पाया है। कोई भी सूचना बस एक क्लिक में उपलब्ध हो जाती है । संस्कृतशास्त्रों के लिये ऑनलाइन सिस्टम एवं डेटा की अनुपलब्धता के कारण लोगों को पुस्तकों पर ही निर्भर रहना पड़ता है । संस्कृत भाषा में सन्निहित ज्ञान का अर्जन भी इस प्रकार से प्राप्त हो, इसके लिये अनेकों प्रयास किए जा रहे हैं । भारतीय दर्शन के सम्यक ज्ञान के लिये इसके विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान होना अत्यावश्यक होता है । इनके ज्ञान के आधार पर ही किसी भी दर्शन में प्रवेश पाना सरल हो जाता है । इसी उद्देश्य से सांख्य-योग दर्शन ई-पारिभाषा कोश का विकास कार्य प्रारम्भ किया गया है । इस शोधपत्र का उद्देश्य प्रस्तुत सांख्य-योग दर्शन के तकनीकी शब्दों के माध्यम से इन दर्शनों का सम्यक ज्ञान कराना है, जिससे कि किसी भी इच्छुक व्यक्ति के लिये ई-परिभाषा कोश सरलता पूर्वक इन दशर्नों को समझने सहायक हो सके । यह सिस्टम परिणाम स्वरूप पारिभाषिक शब्द, उसका लक्षण विभिन्न मूल ग्रन्थों के अनुसार एवं सम्पूर्ण विश्लेषण (व्याख्या सहित) प्रदर्शित करता है । यह सिस्टम ऑनलाइन होने के कारण इसका प्रयोग कभी भी किसी भी समय किया जा सकता है । यह सिस्टम संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की वेबसाइट http://cl.sanskrit.du.ac.in पर उपलब्ध है ।

खोजशब्द (Keywords): दर्शन पारिभाषिक शब्द, ई-परिभाषाकोश, सांख्य-योग परिभाषाकोश ।

1. पृष्ठभूमि (Background)

भारतीय वाङ्मय के अन्तर्गत कोश साहित्य का पर्याप्त विस्तार हुआ है । प्राचीन काल का प्रथम शब्द संग्रह निघण्टु है । इसमें वैदिक शब्दों का संग्रह पाँच अध्यायों में विभक्त है । निघण्टु को कोश साहित्य का प्रथम ग्रन्थ माना जाता है । इसके बाद अनेकों कोशों की रचना भारतीय वाङ्मय में हुई, यथा – वाचस्पत्यम् (तारानाथ, 1812-85), शब्दकल्पद्रुमः(वसु, 1967), कविकल्पद्रुमः, अमरकोशः (बालशास्त्री, 2012) आदि। प्रसिद्ध कोशकार श्री वामन आप्टे ने कोश शब्द के 'म्यान आवरण, भण्डार ढेर, पात्र, शब्दावली, शब्दार्थ संग्रह, वेदान्तानुसार अन्नमय आदि पञ्चकोश अर्थ दिये हैं । प्रकृत अनुसन्धान में कोश शब्द शब्दकोश, शब्दार्थ

सङ्ग्रह, शब्दावली के रूप में अभिप्रेत है । उपर्युक्त निघण्ट्वादि कोश पुस्तक रूप में उपलब्ध हैं, परन्तु सूचना एवं प्रौद्योगिकी के इस युग में पढने-लिखने के लिए कम्प्यूटर पर हमारी निर्भरता बढती ही जा रही है । अब कम्प्यूटर पर उपलब्ध संस्थापन योग्य तथा ऑनलाइन शब्दकोशों के द्वारा शब्दों को ढूंढा जाना न सिर्फ सरल होता है, वरन् कई प्रकार के सहायक अनुप्रयोगों यथा 'कॉपी तथा पेस्ट' इत्यादि का उपयोग कर अपने कार्य को और भी सरलतर बनाया जा सकता है । इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर सांख्य-योग दर्शन का ई-परिभाषा कोश निर्मित किया जा रहा है । परितो भाष्यते उच्यते वा इति परिभाषा , इस व्युत्पत्ति के अनुसार परि उपसर्ग पूर्वक भाष् धातु से अच् प्रत्यय और स्त्रीत्व की विवक्षा में 'परिभाषा' पद व्युत्पन्न होता है । जिसका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ होता है – जो कथन सभी प्रकार से पूर्णरूप से कहा जाये । शास्त्र के अनुसार यह एक ऐसा प्रकाशक तत्व होता है जिसके प्रकाश में शास्त्रीय तत्व स्पष्ट होता है । भारतीय दर्शन में महर्षि कपिल द्वारा रचित सांख्यदर्शन द्वैतवादी दर्शन है । महाभारत के अनुसार जो संख्या अर्थात् प्रकृति-पुरुष के विवेकज्ञान का उपदेश करते हैं, तथा जो तत्वों की संख्या चौबीस निर्धारित करते हैं, वे सांख्य कहे जाते हैं (Menon, 2017)। इस दर्शन में प्रकृति तथा पुरुष दो तत्वों को स्वीकार किया गया है । सांख्यसूत्र में 6 अध्याय तथा 527 सूत्र हैं तथा 100 पारिभाषिक शब्दों का संकलन हुआ है । सांख्य के ही युग्मभूत योगदर्शन के रचयिता महर्षि पतञ्जलि मुनि हैं । जिस प्रकार सांख्य, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त आदि भारतीय दर्शनों पर सर्वप्रथम सूत्रात्मक ग्रन्थ लिखे गये, उसी प्रकार पतञ्जलि ने शास्त्रों में विकीर्ण योगतत्वों को सूत्रात्मक ग्रन्थशैली में निबद्ध किया । पातञ्जलयोगसूत्र में जहाँ एकतः योगसाम्प्रदायिकों की विविध विचारधारायें प्राप्त हैं वहाँ अपरतः पतञ्जलि का स्वकीय विशिष्ट दृष्टिकोण भी प्रतिबिम्बित है । योग दर्शन प्रकृति, पुरुष के स्वरुप के साथ ईश्वर के अस्तित्व को मानते हुए मनुष्य जीवन की उन्नति के लिये एक बडा व्यावहारिक और मनोवैज्ञानिक रूप से प्रस्तुत करता है । योगसूत्रों की सर्वोत्तम व्याख्या व्यास मुनि द्वारा लिखित व्यासभाष्य में प्राप्त होती है । योगसूत्र में 4 पाद तथा 195 सूत्र हैं और 295 पारिभाषिक शब्द प्राप्त होते हैं ।

2. उद्देश्य (Objectives)

इस शोधपत्र का उद्देश्य प्रस्तुत सांख्य-योग दर्शन ई-परिभाषा कोश को प्रस्तुत करना है। जिसकी सहायता से कोई भी जिज्ञासु इन दर्शनों से सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त सके।

3. सर्वेक्षण (Review)

सूचना एवं प्रौद्योगिकी के इस युग में पढने-लिखने के लिए कम्प्यूटरों पर हमारी निर्भरता बढती ही जा रही है। आज अधिसंख्य जन, प्रायः अपने कार्य हेतु अधिक समय कम्प्यूटरों का ही प्रयोग कर रहे हैं। लेखन के लिए तथा लिखे हुए को अच्छे ढंग से समझने के लिए प्रायः शब्दकोशों की आवश्यकता होती है। संस्कृत भाषा से सम्बन्धित सङ्गणकीय भाषाविज्ञान के क्षेत्र में, कई संस्थान इस प्रकार के निर्माण के लिए कार्यरत हैं। जिनमें से जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (सीडैक), हैदराबाद विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय मुख्य संस्थान शोध और विकास कर रहे हैं। कुछ सैद्धान्तिक कार्य के रूप में न्यायोक्तिकोशः (मिश्र,1978), योगसूत्रभाष्यकोषः (दास, 2009), संस्कृत-हिन्दी कोश (आप्टे, 2009), A concise dictionary of Indian philosophy (Grimes, 1996), The Practical Sanskrit-English Dictionary (Apte, 2007), न्यायकोशः (शास्त्री, 1928) आदि अन्य कार्य भी प्राप्त होते हैं। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा अनेक कार्य किये गये है और यह प्रक्रिया निरन्तर उन्नति पर है जिनमें से कुछ कार्य है- मेदिनिकोश (Dwivedy, 2009), Dictionary of sankhya, yoga & Vedanta (Jain, 2007) आदि। संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय ने भी संस्कृत भाषा के तकनीक विकास के क्षेत्र में अपना योगदान दिया है। इनके विभिन्न सङ्गणकीय तन्त्रों में से ऋग्वैदिक सर्च (Kumar, 2016), पौराणिक सर्च (Chandra & Anju, 2017) आदि दो कार्य तत्काल खोज (Instant Search) से सम्बन्धित है।

4. सामग्री एवं शोध प्रविधि (Material & Methods)

सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के ई-परिभाषा कोश निर्माण हेतु मुख्य रूप से सांख्यसूत्र तथा योगसूत्र और इनके भाष्य एवं टीका ग्रन्थों, यथा - सांख्यकारिका, सांख्यप्रवचनभाष्य, व्यासभाष्य, भोजवृत्ति, तत्त्ववैशारदी एवं योगवार्त्तिक को सन्दर्भ बनाकर पारिभाषिक शब्दों का संकलन एवं उनका विश्लेषण किया गया है । सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के ई-परिभाषा कोश निर्माण के लिये सर्वप्रथम इनके मूल तथा प्रकरण ग्रन्थों को मुख्य रूप से आधार बनाकर यह शोध किया जा रहा है । जिनमें से सांख्य दर्शन के 100 तथा योग के 295 पारिभाषिक शब्दों का संकलन किया जा चुका है । इसके अनन्तर पारिभाषिक शब्दों का एक डेटाबेस भी तैयार किया गया है, जिसमें पारिभाषिक शब्दों के अर्थ, विभिन्न ग्रन्थों के अनुसार उनके लक्षण तथा विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है । प्रायः इस शोध के विकास के लिये संगणकीय भाषाविज्ञान एवं सॉफ्टवेयर आभियान्त्रिकी की विधि प्रयुक्त की गयी है । सिस्टम के निर्माण हेतु शोधप्रविधि को Figure 1 के माध्यम से समझा जा सकता है ।

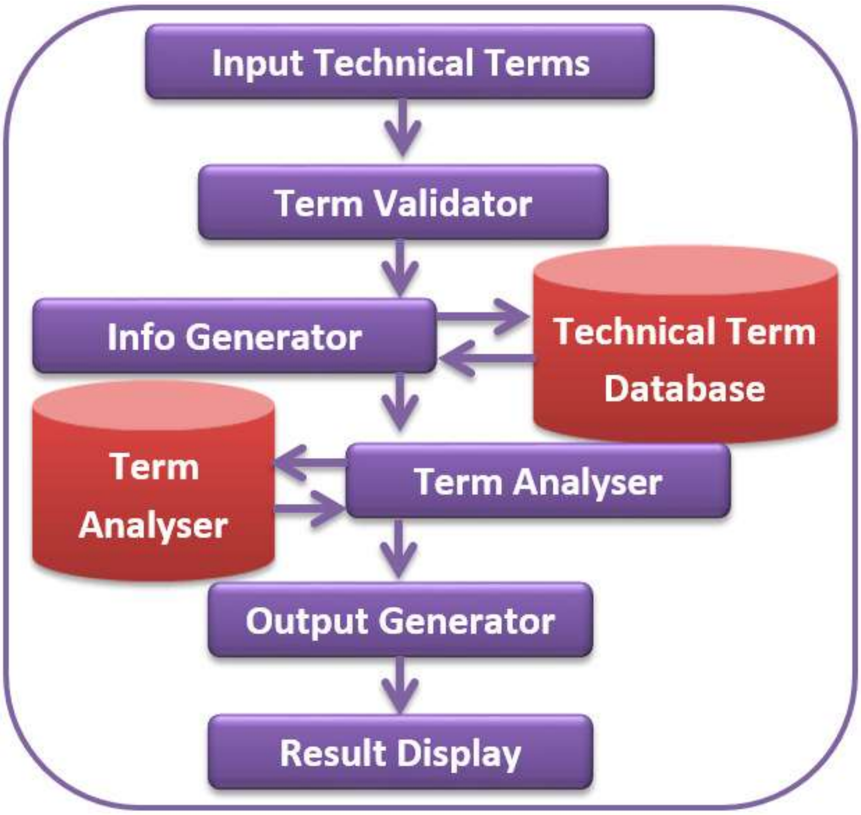
Input Technical Terms
Term Validator
Info Generator
Technical Term Database
Term Analyser
Term Analyser
Output Generator
Result Display

Figure 1: **शोधप्रविधि**

5. परिणाम एवं परिचर्चा (Result & Discussions)

परिणाम स्वरूप यह तन्त्र सांख्य-योग दर्शन ई-परिभाषाकोश प्रस्तुत करता है । जिसमें एक यूजर इन्टरफेस संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की वेबसाइट http://cl.sanskrit.du.ac.in पर उपलब्ध है । वेबपेज का प्रारूप Figure 2 में दिखाया गया है । इस इन्टरफेस में एक टेक्स्ट बॉक्स है, जिसमें यूजर सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्द को देवनागरी (UTF-8) में टाइप करता है । तदुपरान्त टेक्स्टबॉक्स के नीचे वाले बटन (पारिभाषिक शब्द विश्लेषण के लिये क्लिक करें) पर क्लिक करते ही परिणाम (Figure 3) प्रदर्शित हो जाता है। अथवा यूजर को ड्रोपडाउन मेन्यू से पारिभाषिक शब्द का चुनाव कर, बटन पर क्लिक करने से परिणाम प्राप्त कर होता है । यह चरण उनके लिये हितकर है जिन्हें सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के बारे में पता ही नहीं है । परिणाम रूप में पारिभाषिक शब्द, उसका लक्षण विभिन्न ग्रन्थों के अनुसार एवं सम्पूर्ण विश्लेषण व्याख्या सहित प्रदर्शित होते हैं । इस सिस्टम के फलस्वरूप कोई भी व्यक्ति कभी भी और कहीं भी इस ज्ञान का लाभ उठा सकता है क्योंकि यह तन्त्र विभागीय वेबसाइट पर 24*7 ऑनलाइन उपलब्ध है । इस तन्त्र के माध्यम से अगर कोई पारिभाषिक शब्द खोजना चाहता है तो उसे उस शब्द का अर्थ, सम्बन्धित दर्शन, लक्षण तथा सम्पूर्ण विश्लेषण प्राप्त कर सकता है ।

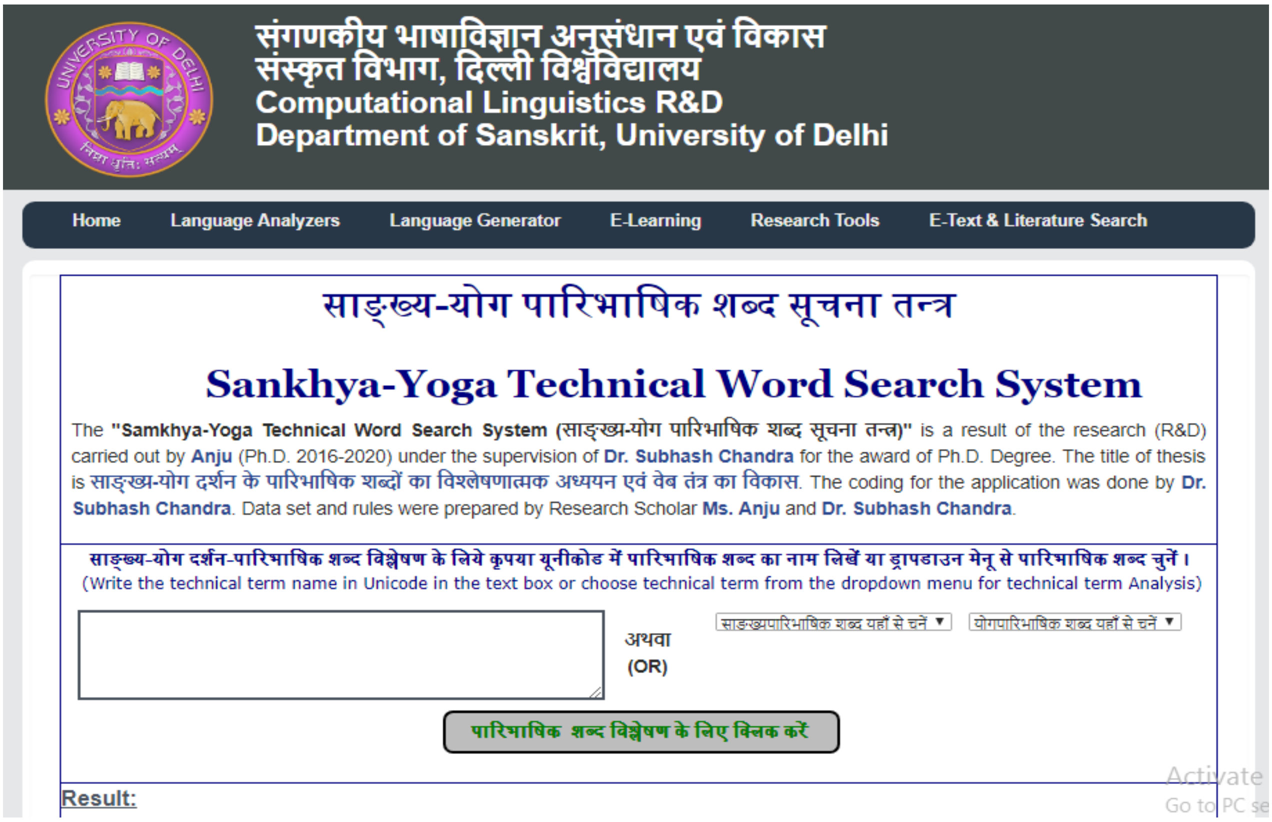

संगणकीय भाषाविज्ञान अनुसंधान एवं विकास
संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
Computational Linguistics R&D
Department of Sanskrit, University of Delhi
Home
Language Analyzers
Language Generator
E-Learning
Research Tools
E-Text & Literature Search

साङ्ख्य-योग पारिभाषिक शब्द सूचना तन्त्र

Sankhya-Yoga Technical Word Search System

The **"Samkhya-Yoga Technical Word Search System (साङ्ख्य-योग पारिभाषिक शब्द सूचना तन्त्र)"** is a result of the research (R&D) carried out by **Anju** (Ph.D. 2016-2020) under the supervision of **Dr. Subhash Chandra** for the award of Ph.D. Degree. The title of thesis is साङ्ख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं वेब तंत्र का विकास. The coding for the application was done by **Dr. Subhash Chandra**. Data set and rules were prepared by Research Scholar **Ms. Anju** and **Dr. Subhash Chandra**.

साङ्ख्य-योग दर्शन-पारिभाषिक शब्द विश्लेषण के लिये कृपया यूनीकोड में पारिभाषिक शब्द का नाम लिखें या ड्रापडाउन मेनू से पारिभाषिक शब्द चुनें।
(Write the technical term name in Unicode in the text box or choose technical term from the dropdown menu for technical term Analysis)

अथवा
(OR)
साङ्ख्यपारिभाषिक शब्द यहाँ से चुनें ▼
योगपारिभाषिक शब्द यहाँ से चुनें ▼
पारिभाषिक शब्द विश्लेषण के लिए क्लिक करें
Result:
Activate
Go to PC se

Figure a: यूजर इन्टरफेस

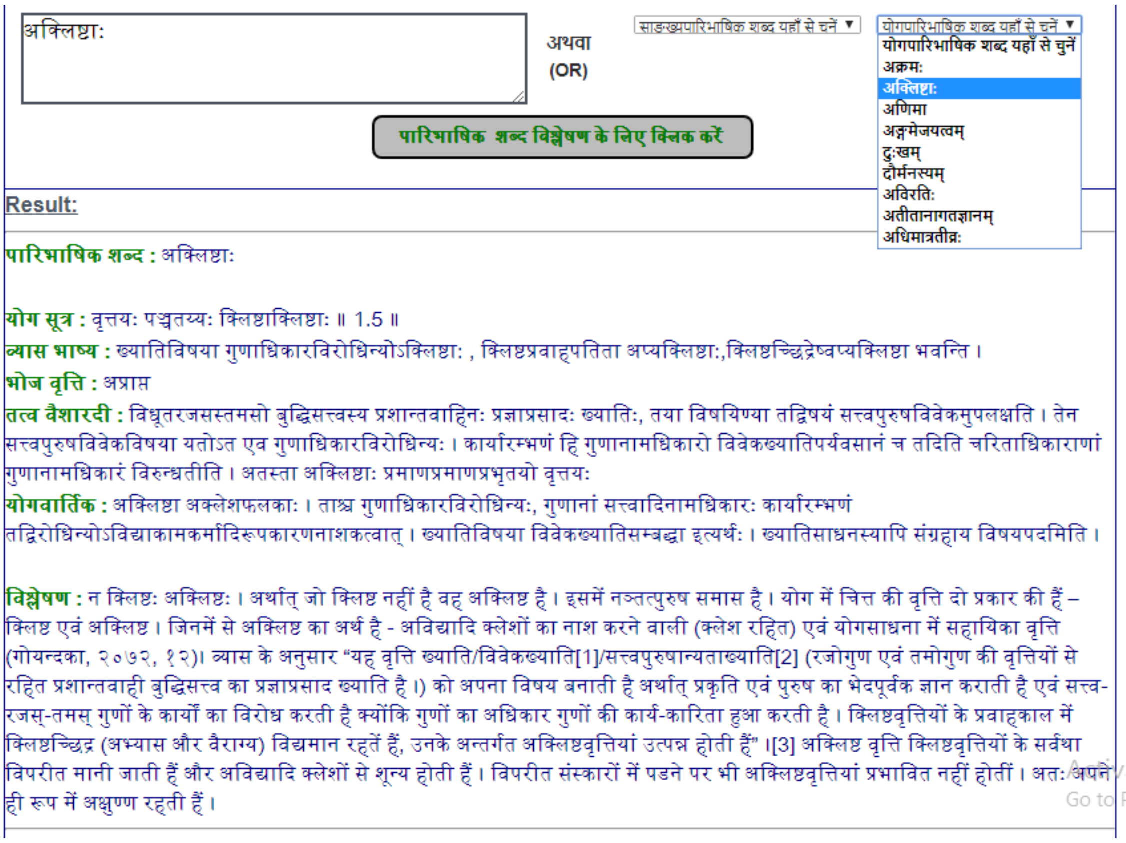
अथवा
(OR)
साङ्ख्यपारिभाषिक शब्द यहाँ से चुनें ▼
योगपारिभाषिक शब्द यहाँ से चुनें ▼
योगपारिभाषिक शब्द यहाँ से चुनें
अक्रमः
अक्लिष्टाः
अणिमा
अङ्गमेजयत्वम्
दु:खम्
दौर्मनस्यम्
अविरतिः
अतीतानागतज्ञानम्
अधिमात्रतीव्रः
पारिभाषिक शब्द विश्लेषण के लिए क्लिक करें
Result:

अक्लिष्टाः

पारिभाषिक शब्द : अक्लिष्टाः

योग सूत्र : वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टाक्लिष्टाः ॥ 1.5 ॥
व्यास भाष्य : ख्यातिविषया गुणाधिकारविरोधिन्योऽक्लिष्टाः , क्लिष्टप्रवाहपतिता अप्यक्लिष्टाः,क्लिष्टच्छिद्रेष्वप्यक्लिष्टा भवन्ति ।
भोज वृत्ति : अप्राप्त
तत्व वैशारदी : विधूतरजसस्तमसो बुद्धिसत्त्वस्य प्रशान्तवाहिनः प्रज्ञाप्रसादः ख्यातिः, तया विषयिण्या तद्विषयं सत्त्वपुरुषविवेकमुपलक्षति । तेन सत्त्वपुरुषविवेकविषया यतोऽत एव गुणाधिकारविरोधिन्यः । कार्यारम्भणं हि गुणानामधिकारो विवेकख्यातिपर्यवसानं च तदिति चरिताधिकाराणां गुणानामधिकारं विरुन्धतीति । अतस्ता अक्लिष्टाः प्रमाणप्रमाणप्रभृतयो वृत्तयः
योगवार्तिक : अक्लिष्टा अक्लेशफलकाः । ताश्च गुणाधिकारविरोधिन्यः, गुणानां सत्त्वादिनामधिकारः कार्यारम्भणं तद्विरोधिन्योऽविद्याकामकर्मादिरूपकारणनाशकत्वात् । ख्यातिविषया विवेकख्यातिसम्बद्धा इत्यर्थः । ख्यातिसाधनस्यापि संग्रहाय विषयपदमिति ।

विश्लेषण : न क्लिष्टः अक्लिष्टः । अर्थात् जो क्लिष्ट नहीं है वह अक्लिष्ट है । इसमें नञ्तत्पुरुष समास है । योग में चित्त की वृत्ति दो प्रकार की हैं – क्लिष्ट एवं अक्लिष्ट । जिनमें से अक्लिष्ट का अर्थ है - अविद्यादि क्लेशों का नाश करने वाली (क्लेश रहित) एवं योगसाधना में सहायिका वृत्ति (गोयन्दका, २०७२, १२)। व्यास के अनुसार “यह वृत्ति ख्याति/विवेकख्याति[1]/सत्त्वपुरुषान्यताख्याति[2] (रजोगुण एवं तमोगुण की वृत्तियों से रहित प्रशान्तवाही बुद्धिसत्त्व का प्रज्ञाप्रसाद ख्याति है ।) को अपना विषय बनाती है अर्थात् प्रकृति एवं पुरुष का भेदपूर्वक ज्ञान कराती है एवं सत्त्व-रजस्-तमस् गुणों के कार्यों का विरोध करती है क्योंकि गुणों का अधिकार गुणों की कार्य-कारिता हुआ करती है । क्लिष्टवृत्तियों के प्रवाहकाल में क्लिष्टच्छिद्र (अभ्यास और वैराग्य) विद्यमान रहतें हैं, उनके अन्तर्गत अक्लिष्टवृत्तियां उत्पन्न होती हैं” ।[3] अक्लिष्ट वृत्ति क्लिष्टवृत्तियों के सर्वथा विपरीत मानी जाती हैं और अविद्यादि क्लेशों से शून्य होती हैं । विपरीत संस्कारों में पडने पर भी अक्लिष्टवृत्तियां प्रभावित नहीं होतीं । अतः अपने ही रूप में अक्षुण्ण रहती हैं ।

Figure 1: परिणाम

6. सांख्य-योग दर्शन ई-परिभाषाकोश का वैशिष्ट्य

वेब आधारित सांख्य-योग दर्शन ई-परिभाषाकोश एक ऑनलाइन सूचना तंत्र है । जिसका कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान, दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा विकसित किया गया है । उपयोगकर्ता सांख्य-योग दर्शन में उपलब्ध पारिभाषिक शब्द को खोज सकता है और उस शब्द का पूरा विश्लेषण प्राप्त कर सकता है । और परिणाम देवनागरी लिपि में UTF -8 प्रारूप में पूर्ण विवरण के साथ प्राप्त होता है । प्रत्येक पारिभाषिक शब्द का लक्षण मूल तथा प्रकरण ग्रंथ के अनुसार प्रकट होता है । इन सब लक्षणों को आधार बनाकर विश्लेषण किया गया है । इसी के साथ-साथ उस पारिभाषिक शब्द के विषय में जानकारी उपलब्ध होती है कि वह शब्द अन्य दर्शन में किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है ।

7. शोध की भावी सम्भावना (Future Directions)

यह प्रणाली अभी केवल सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के ई-परिभाषाकोश के लिये बनाई गयी है । जो देवनागरी लिपि में उपयोगकर्ता (user) द्वारा लिखने पर परिणाम भी देवनागरी लिपि में देता है । इस प्रणाली के माध्यम से अन्य दर्शन के लिये इस प्रकार का सिस्टम बनाया जा सकता है और साथ ही साथ अन्य भाषाओं में भी इसका निर्माण किया जा सकता है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची (References)

1. Apte, Vaman Shivram, *The Practical Sanskrit-English Dictionary (Revised & Enlarged Edition)*. Motilal Banarsidass, 2007.
2. Chandra, Subhash and Anju, *Puranic Search: An Instant Search System for Puranas* . Language in India, ISSN 1930-2940, Volume 17:5, 2017.
3. Dwivedy, Praveen Kumar, *medinikosh*. J.N.U., Delhi, 2009.
4. Grimes, John A, *A concise dictionary of Indian philosophy*: Sanskrit terms defined in English. Suny Press, 1996.
5. Jain, Sapna, *Dictionary of sankhya, yoga & Vedanta*, JNU, New Delhi, 2007.
6. Kumar, Jalaj, *वेब आधारित ऋग्वेदीय खोज एवं अनुक्रमणिका तन्त्र का विकास,* M.Phil. Diss. University of Delhi, New Delhi, 2016.
7. Menon, R., *The Complete Maharabharata*, Rupa Publications, Delhi, 2017.
8. आप्टे, वामन शिवराम, *संस्कृत-हिन्दी कोश,* चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, 2009.
9. तारानाथ, तर्कवाचस्पति, *वाचस्पत्यम्,* काव्यप्रकाश प्रेस, कलकत्ता, 1812-1885.
10. दास, भगवान, *योगसूत्रभाष्यकोषः*, भारतीय विद्या संस्थान, 2009.
11. बालशास्त्री (सम्पा.), *अमरकोश,* चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2012.
12. मिश्र, छविनाथ, *न्यायोक्तिकोशः*, अजन्ता पब्लिकेशन्स (इण्डिया), 1978.

13. वसु, वरदाप्रसाद एवं वसु, हरिचरण (सम्पा.), *शब्दकल्पद्रुम*, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, 1967.
14. शास्त्री, वासुदेव, *न्यायकोशः*, भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट पूना, 1928.

==

Ms. Anju
Doctoral Research Scholar, Computational Linguistics
Department of Sanskrit, Faculty of Arts, University of Delhi
Delhi-110007, India
anjusingh5710@gmail.com

Dr. Subhash Chandra, M. Phil., Ph.D.
Assistant Professor, Computational Linguistics
Department of Sanskrit, Faculty of Arts, University of Delhi
Delhi-110007, India
subhash.jnu@gmail.com
schandra@sanskrit.du.ac.in